

## भारतीय दर्शन में 'मोक्ष-विचार'

# The Doctrine of Liberations in Indian Philosophy

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 25/11/2020, Date of Publication: 26/11/2020

### सारांश

मोक्ष का शाब्दिक अर्थ 'मुक्ति' है। भारतीय दर्शन में मोक्ष का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। दर्शन की कोई भी शाखा मोक्ष की उपेक्षा नहीं कर सकता क्योंकि भारत में दर्शन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है। चार्वाक को छोड़कर भारतीय दर्शन की प्रत्येक शाखा यथा जैन, बौद्ध, न्याय, वैशेषिक, सांख्य-योग और मीमांसा-वेदान्त मोक्ष को मनुष्य का परम पुरुषार्थ स्वीकार किया है। मनुष्य के प्रत्येक कर्म और उसके संपूर्ण जीवन में मोक्ष एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

The literal meaning of Moksha is "Freedom". The place of salvation is very important in Indian philosophy. No branch of philosophy can ignore salvation because salvation is the ultimate goal of philosophy in India. Except Charvaka, every branch of Indian philosophy such as Jainism, Buddhism, Nyaya, Vaisesika, Sankhya-Yoga and Mimamsa-Vedanta, Moksha have accepted the ultimate effort of man. Moksha occupies an important place in every karma of man and his entire life.

**मुख्य शब्द** : भारतीय दर्शन, मोक्ष, मुक्ति, योग।

Indian Philosophy, Salvation, Freedom.

### प्रस्तावना

भारतीय दर्शन व्यावहारिक दर्शन है। यहाँ पर दर्शन जीवन के हर क्षेत्र में विद्यमान है। भारत में दर्शन का जीवन से गहरा सम्बन्ध रहता है। दर्शन का उद्देश्य सिर्फ मानसिक कौतूहल नहीं है बल्कि जीवन की समस्याओं को सुलझाना है। व्यावहारिक पक्ष की प्रधानता के कारण प्रत्येक दर्शन में पुरुषार्थ की चर्चा की गई है। पुरुषार्थ चार माने गये धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। चार्वाक को छोड़कर सभी दर्शनों में मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है। मोक्ष का अर्थ 'दुःख विनाश' होता है। सभी दर्शनों में मोक्ष का यह सामान्य विचार माना गया है। यहाँ के दार्शनिक मोक्ष के लिए सिर्फ स्वरूप की ही चर्चा नहीं करते बल्कि मोक्ष के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इसका मूलकारण यह है कि दर्शन का उद्देश्य मोक्ष है। प्रो० मैक्समूलर के अनुसार भारत में दर्शन ज्ञान के लिए नहीं, बल्कि सर्वोच्च लक्ष्य के लिए था जिसके लिए मनुष्य इस जीवन में प्रयत्नशील रह सकता है।<sup>1</sup>

### अध्ययन का उद्देश्य

भारत में दर्शन का लक्ष्यमोक्ष प्राप्ति है। इस विषय पर गहनविचार विमर्श किया गया है और प्रत्येक दार्शनिकों ने मोक्ष प्राप्ति के विभिन्न साधनों को बतलाया है। यहाँ पर मोक्ष विचार का हमारा उद्देश्य मोक्षसंबंधी मुख्य विचारों पर दृष्टिपात करना है।

### विषय विस्तार

चार्वाक दर्शन में मोक्ष की अवधारणा अन्य भारतीय दर्शन से बिल्कुल अलग है। चार्वाक मोक्ष को काल्पनिक वस्तु मानता है। चार्वाक आत्मा की सत्ता में विश्वास नहीं करता है। वह मानता है कि जब तक मनुष्य जीवित है तब तक वह अपने आप को दुःखों के जंजाल से मुक्त नहीं कर सकता। सुख-दुःख जीवन के मिश्रित भाव है। सुखों को बढ़ाकर दुःखों को कम किया जा सकता है, लेकिन दुःखों का पूर्ण विनाश संभव नहीं है। उसका कहना है कि मृत्यु के बाद कुछ नहीं बचता है। मृत्यु ही अन्तिम सत्य है। मृत्यु ही मोक्ष है। जब दुःखों का विनाश मृत्यु पाकर हो तो फिर ऐसे मोक्ष की कामना करना व्यर्थ है। चार्वाक पुनर्जन्म तथा परलोक में भी विश्वास नहीं करता है। जो कुछ है वह इस धरती पर ही मौजूद है। मरने के बाद कुछ भी शेष नहीं बचता। इसलिए मोक्ष या मुक्ति के उलझनों में इंसान को न पड़कर वर्तमान को अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए।<sup>2</sup>

जैन दर्शन यह मानता है कि मोक्ष प्राप्ति के लिए कर्म के बंधन से छुटकारा पाना अति आवश्यक है। ये कर्म ही हैं जिसके परिणामस्वरूप इस



### ललन कुमार

अतिथि व्याख्याता,  
दर्शन शास्त्र विभाग,  
राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय,  
सहरसा, बिहार, भारत

संसार मे मनुष्य दुःख भोगता है। इन कर्मों का क्षय ही मोक्ष है। जैन दर्शन में पाँच अवस्थाओं का जिक्र है जो कर्म तथा जीव के संयोग सम्बन्ध और वियोग को बतलाते हैं। वे इस प्रकार हैं— आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, तथा मोक्ष। आस्रव का अर्थ होता है 'कर्म पुद्गल का जीव की ओर प्रवाह।' जब ये कर्म पुद्गल जीव को जकड़ लेते हैं तब इसे बंध की संज्ञा दी जाती है। एक बार कर्म चक्र में फँस जाने पर एक कर्म से अनेक कर्म उत्पन्न होते हैं और मानव बंधन में जकड़ जाता है। इसे रोकने के लिए संवर का सहारा लिया जाता है। संवर का अर्थ है 'नये कर्मों का शरीर में प्रवेश पर रोक।' अब जो कर्म पहले से मौजूद हैं उन्हें समाप्त कर देना 'निर्जरा' कहलाता है। जिसके अन्तर्गत दर्शन, ज्ञान तथा चरित्र को व्यवहार में लाया जाता है। तब आत्मा का शुद्ध स्वरूप निखर कर सामने आता है। यही मोक्ष की अवस्था है।<sup>3</sup>

बौद्धदर्शन के प्रतिपादक गौतम बुद्धने इस संसार को दुःखमय माना है। उन्होंने न सिर्फ यह बताया कि संसार दुःखों से भरा है वल्कि इन दुःखों से छुटकारा पाने का मार्ग भी दिखाया। बौद्धदर्शन में मोक्ष को 'निर्वाण' कहा गया है। जिसका वर्णन निषेधात्मक पदों में ही किया जा सकता है। निर्वाण शब्द का अर्थ है 'बुझना'। जैसे तेल की क्षय से दीपक बुझ जाता है वैसे ही अविद्या और क्लेश के क्षय से पुरुष निर्वाण प्राप्त करते हैं। इस तरह अविद्या ही सब दुःखों का मूल है। अविद्या का नाश ही निर्वाण है।<sup>4</sup>

कालान्तर में बौद्धदर्शन मुख्यतः दो सम्प्रदायों में बँट गया—हीनयान और महायान। इन दोनों सम्प्रदायों में मतभेद का सबसे बड़ा कारण मोक्ष विचार को लेकर है अर्थात् निर्वाण प्राप्ति। हीनयान सम्प्रदाय के समर्थकों का मानना है कि सिर्फ अपने मोक्ष के लिए तत्पर रहना चाहिए अर्थात् प्रत्येक अपने मुक्ति के लिए प्रयास करे। जबकि महायान सम्प्रदाय का मत इसके ठीक विपरीत है। उनका कहना है कि सबों की मुक्ति के लिए प्रयास करना चाहिए। महात्मा बुद्ध ने अपने जीवन-काल में ही निर्वाण प्राप्त कर लिया था और उन्होंने सर्वकल्याण के लिए अपने उद्देश्यों को जन-जन तक पहुँचाया।<sup>5</sup>

सांख्य दर्शन त्रिविध दुःखों को मानता है। ये त्रिविध दुःख हैं— आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक। इन दुःखों से छुटकारा ही मोक्ष, मुक्ति या अपवर्ग कहलाता है। सांख्य दर्शन दो तत्वों को मानता है—पुरुष तथा प्रकृति। पुरुष बन्धन तथा मोक्ष से रहित है। पुरुष न तो बन्धन में पड़ता है और न ही वह मुक्त होता है। शुद्धपुरुष कभी भी बन्धन में नहीं पड़ता। पुरुष जब अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं जान पाता है तब उसे बंधन युक्त कहा जाता है और पुरुष के अपने वास्तविक स्वरूप का पहचान ही मोक्ष है। सांख्य दर्शन में कहा गया है कि कर्म से मोक्ष नहीं मिल सकता क्योंकि कर्म गुणों से संभव है और मोक्ष निस्त्रैगुण्य है। पुरुष और प्रकृति को भेद का ज्ञान विवेक ज्ञान है। और यह विवेक ज्ञान ही मोक्ष है। सांख्य जीवन्मुक्ति तथा विदेह मुक्ति दोनों को मानता है।<sup>6</sup>

जीव को ज्योंही तात्व ज्ञान— का अनुभव होता है। अर्थात् पुरुष और प्रकृति के भेद का ज्ञान होता है त्योंही वह मुक्त हो जाता है। यद्यपि वह मुक्त हो जाता है

फिर भी पूर्वजन्म के कर्मों के प्रभाव के कारण उसका शरीर विद्यमान रहता है। शरीर का रहना मुक्ति—प्राप्ति में बाधा नहीं डालता है। पूर्व जन्म के कर्मों का फल जब तक शेष नहीं हो जाता है शरीर जीवित रहता है। इसकी व्याख्या एक उपमा से की जाती है। जिस प्रकार कुम्हार के डंडे को हटा लेने के बावजूद पूर्व वेग के कारण कुम्हार का चक्का कुछ समय तक घुमता रहता है उसी प्रकार पूर्व जन्म के उन कर्मों के कारण जिनका फल समाप्त नहीं हुआ, शरीर मुक्ति के बाद भी कुछ समय तक कायम रहता है। इस प्रकार की मुक्ति को जीवन—मुक्ति कहा जाता है। जीवन—मुक्ति का अर्थ है जीवन—काल में मोक्ष की प्राप्ति। इस मुक्ति को सदेह मुक्ति भी कहा जाता है, क्योंकि इस मुक्ति में देह या शरीर विद्यमान रहता है। जीवन—मुक्त व्यक्ति शरीर के रहने पर शरीर से कोई सम्बन्ध अनुभव नहीं करता। वह कर्म करता है। परंतु उसके द्वारा किये गये कर्म से फल का संचय नहीं होता है। क्योंकि कर्म की शक्ति समाप्त हो जाती है। अन्तिम मुक्ति जो मृत्यु के बाद होती है, विदेह मुक्ति कही जाती है। इस मुक्ति की प्राप्ति तब होती है जब पूर्व जन्म के शेष कर्मों के फल का अन्त हो जाता है। इस मुक्ति में शरीर का अभाव होता है।<sup>7</sup>

योग दर्शन योग साधना के द्वारा मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग दिखलाता है। जब तक चित में विकार और परिणाम होते रहते हैं तब तक उन पर आत्मा का प्रकाश पड़ता रहता है और विवेक ज्ञान के अभाव में आत्मा उन्ही में अपने को देखता है। फलस्वरूप वह सांसारिक विषयों से सुख—दुःख का अनुभव करने लगता है और उनमें राग—द्वेष के भाव रखने लगता है। यही आत्मा का बंधन है। इस बंधन से मुक्ति पाने के निमित्त शरीर, इन्द्रिय, मन और चितवृत्तियों का निरोध करना आवश्यक है। जब कार्यचित का धारा—प्रवाह बन्द हो जाता है और वह कारणचित के रूप में आ जाता है तब आत्मा नित्य मुक्त शुद्धचैतन्य रूप में देखता है। चितवृत्तियों के निरोध के द्वारा आत्म—साक्षात्कार योग का उद्देश्य है।<sup>8</sup>

न्याय दर्शन में मोक्ष को अपवर्ग के नाम से पुकारा गया है। जिसका तात्पर्य है आत्मा का शरीर और इन्द्रियों के बंधन से मुक्त हो जाना। इन्द्रियाँ यदि हमारे वश में नहीं हैं तो हमें निरन्तर दुःख भोगना पड़ता है। इन्द्रियों को अपने वश में रखना अत्यन्त आवश्यक है। मोक्ष की प्राप्ति तभी हो सकती है जब हम शरीर और इन्द्रियों के बन्धन से मुक्त हो।

न्याय दर्शन मोक्ष में दुःख के अभाव के साथ—साथ सुख का भी अभाव मानता है। आत्मा सुख—दुःख से परे हो जाता है। इस अवस्था में दुःख और सुख दोनों का सदा के लिए अन्त हो जाता है। आत्मा अचेतन हो जाता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए श्रवण—मनन—निदिध्यासन का मार्ग बतलाया गया है। धर्मग्रन्थों में बताया गए उपदेशों के सुनने उनको चिंतन करने तथा ध्यान करने से आत्मा को अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। वह अपने को शरीर से भिन्न समझने लगता है। यही मोक्ष या अपवर्ग है।<sup>9</sup>

मीमांसा दर्शन भी मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य स्वीकार करता है। प्रभाकर और कुमारिल जैसे मीमांसकों

ने मोक्ष के महत्व पर प्रकाश डाला है। उन्होंने मोक्ष के स्वरूप और साधनों का विचार किया है।

मीमांसा के मतानुसार आत्मा स्वभावतः अचेतन है। आत्मा में चेतना का संचार तभी होता है जब आत्मा का संयोग शरीर, इन्द्रिय, मन आदि से होता है। मोक्ष की अवस्था में आत्मा का सम्पर्क शरीर इन्द्रिय मन से टूट जाता है। इसका फल यह होता है कि मोक्ष की अवस्था में आत्मा चैतन्य से शून्य हो जाती है।

मीमांसा के मतानुसार मोक्ष की प्राप्ति ज्ञान और कर्म से सम्भव है। प्रभाकर ने कामय और निषिद्धकर्मों को न करने तथा नित्य कर्मों के अनुष्ठान एवं आत्मज्ञान को मोक्ष का उपाय कहा है। कुमारिल ने कहा है कि जो शरीर के बन्धन से छुटकारा पाना चाहता है उसे कामय और निषिद्धकर्म नहीं करना चाहिए। कुमारिल के मतानुसार मोक्ष कर्म और ज्ञान के सम्मिलित प्रयास से संभव है। केवल कर्म से मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। और केवल आत्मज्ञान को ही मोक्ष का साधन नहीं समझना चाहिए।<sup>10</sup>

अद्वैत वेदान्त दर्शन में मोक्ष का अर्थ आत्मा का ब्रह्म में विलीन हो जाना है। आत्मा वस्तुतः ब्रह्म है परन्तु अज्ञान से प्रभावित होकर वह अपने को ब्रह्म से पृथक् समझने लगता है। यही बन्धन है। मोक्ष की प्राप्ति ज्ञान से ही संभव है। मोक्ष को शंकर ने आनन्द की अवस्था कहा है। आत्मा वस्तुतः मुक्त है। इसलिए मोक्ष का अर्थ प्राप्त हुई वस्तु को फिर से प्राप्त करना कहा गया है— प्राप्तस्य प्राप्ति। मोक्ष आत्मा का स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त करना है। बन्धन को शंकर ने प्रतीति मात्र माना है।<sup>11</sup>

विशिष्टाद्वैत वेदान्त में रामानुज के मतानुसार मुक्ति का अर्थ ब्रह्म से मिलकर तदाकार हो जाना नहीं

है। बल्कि ब्रह्म से सादृश्य प्राप्त करना है। मोक्ष दुःखाभाव की अवस्था है। ईश्वर की कृपा के बिना मोक्ष असम्भव है। रामानुज के अनुसार मोक्ष भक्ति के द्वारा संभव होता है जो ज्ञान और कर्म से उदय होता है। रामानुज सिर्फ विदेह मुक्ति में विश्वास रखते हैं। निष्कर्षः भारतीय दर्शन मोक्ष चरम लक्ष्य स्वीकारते हुए जीवन में आने वाले सभी समस्याओं का निराकरण करने का अनवरत प्रयास करता रहा है। मानव का कल्याण दुःखों से भागने में नहीं है। बल्कि उसका सामना करने में है। भारतीय दर्शन मोक्ष के माध्यम से यह शिक्षा प्रदान करता है। संसार में दुःख है तो उसका समाधान भी संसार में ही है, जिसे दूढ़ने की जरूरत है। मानव का यह प्रयास ही उसे संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी साबित करता है।<sup>12</sup>

#### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो० हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ संख्या— 19
2. वही पृष्ठ संख्या—93
3. भारतीय दर्शन, चंद्रधर शर्मा, पृष्ठ संख्या—42
4. वही, पृष्ठ संख्या— 58
5. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ संख्या—141
6. भारतीय दर्शन, दत्तएवं चटर्जी, पृष्ठ संख्या—257
7. वही पृष्ठ संख्या—258
8. वही पृष्ठ संख्या—284
9. वही पृष्ठ संख्या—214
10. भारतीय दर्शन की रूपरेखा, प्रो.हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, पृष्ठ संख्या—292
11. वही, पृष्ठसंख्या— 20
12. वही पृष्ठ संख्या—20